आचार्य अभयचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती

जीवन-परिचय : मूलसंघ और कुन्दकुन्द की परम्परा में आचार्य माघनन्दि हुए हैं। उनके दो शिष्य थे—1. नेमिचन्द्र भट्टारक, 2. अभयचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती। अभयचन्द्र बालचन्द्र पंडितदेव के श्रुतगुरु थे। अभयचन्द्र सूरि छन्द, न्याय, निघण्टु, शब्द, समय, अलंकार और प्रमाणशास्त्र के प्रकांड विद्वान थे। श्रुतमुनि ने आचार्य अभयचन्द्र को—व्याकरण, दर्शन और सिद्धान्त शास्त्रों का ज्ञाता और सब वादियों (प्रमाण, तर्क) को जीतनेवाला बतलाया है। अभयचन्द्र और बालचन्द्र मुनि की प्रशंसा बेल्लूर के शिलालेखों में भी की गयी है।

अभयचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती का समय ईसा की 13वीं शताब्दी है। ये 89 वर्ष तक जीवित रहे।

रचना-परिचय : इन्होंने दो ग्रन्थों की रचना की है—

1. कर्मप्रकृति संस्कृत पद्य : इस ग्रन्थ में आचार्य ने कर्मसिद्धान्त का अर्थात् कर्म के भेद-प्रभेदों का वर्णन किया है। साथ में पाँच लब्धियों और चौदह गुणस्थानों का भी वर्णन किया है।

2. मन्दप्रबोधिका टीका : श्री जुगलकिशोर मुख्तार ने इनको 'गोम्मटसार जीवकांड' ग्रन्थ की 'मन्दप्रबोधिका' टीका का रचयिता भी माना है। इस ग्रन्थ में भी कर्मसिद्धान्त का विशद वर्णन किया गया है।